INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंग एवं रसाभिव्यक्ति

डॉ० नमिता त्यागी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
डिपार्टमेन्ट ऑफ ड्रॉइंग एवं पेंटिंग, फैकल्टी ऑफ आर्टस
दयाल बाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट,दयालबाग, आगरा

मानव जीवन का उद्देश्य क्रियाशीलता अथवा निर्माण में निहित है। इससे रहित जीवन शून्य से अधिक नहीं होता। एक कलाकृति में मानव अपने अनुभवों को निश्चित चित्र तत्वों एवं सौन्दर्य सिद्धान्तों के आधार पर ही अभिव्यक्ति करता है। इस रूप सजृन की प्रक्रिया को कला की संज्ञा प्रदान की जाती है। हृदय अनुभूति के परिणाम स्वरूप ही कला की भाषा भावों से परिपूर्ण है।

भाव का अर्थ होता है, भावना, उद्वेग, आवेग, संवेग, उन्मेष, इच्छा, प्रकृति और व्यंग इत्यादि का अुनभव। यह अनुभव हमारी इन्द्रियों के द्वारा हमारे आन्तरिक मन मस्तिष्क में उतर कर हमारी आत्मा को प्रभावित करता है। यह भाव सुख एवं दुख के रूप में हमारे अन्तर्मन में प्रवाहित होता है एवं विभिन्न रूपों में परिस्थितियों वश प्रकट होते है। इन्ही भावों को भारतीय प्राचीन शास्त्रों में रस की कोटि में विभाजित किया गया है। यह रस कलाकार की कृतियों में विभिन्न रूपों में एवं रंगों की मनोहारी उपस्थिति से प्रकट होते है जो दर्शक को आनन्द विभोर करते है।

हिन्दू दर्शन के अनुसार ब्रह्म, जिससे हमारी आत्मा को ब्रह्मानन्द रस जो भावनाओं के माध्यम से प्राप्त होता है तथा जो मनुष्य को एक अद्भुत आनन्द प्रदान करता है।[1] इसी प्रकार एक उत्तम चित्र अथवा अभिनय मनुष्य को सन्तोषजनक आनन्द से भर देते हैं क्योंकि वह सम भावों की अभिव्यक्ति करते हैं।[2]
रस की अनुभूति आनन्ददायक होती है, किन्तु हर स्थिति में नहीं। रस का आधार है–भाव। भरतमुनि ने आठ स्थायी भावों के साथ आठ रसों को बताया है–

श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानकः ।
वीभत्सादृभूतसंज्ञोचेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृतः ।।[3]

मार्कण्डेय मुनि ने विष्णु धर्मोत्तर पुराण में नौ स्थायी भावों पर आधारित नौ प्रकार के 'रस चित्रों' का उल्लेख किया है–

श्रृंगार, हास्य, करुण, वीर, रौद्र, भयानकः ।
वीभतसाद्भुत शानतश्य नव चित्ररसाः स्मृतः ।।[4]

भरत ने स्थायी भाव को ही रस माना है–

विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगाद्र सनिस्पति।[5]

अर्थात विभाव, अुनभाव और व्यभिचारी भाव के मिश्रित अभिनयों से उत्पन्न स्थायी भाव रस है।
इस प्रकार हम देखते है कि रस, कला एवं मानव में अत्यन्त घनिठ समन्व्य है। भारतीय कला व साहित्य रस प्रधान रहा है तथा रसों ने उन्हें जीवन्त रूप प्रदान किया। चेतनात्मक अनुभूत शक्ति, जो मानव के हृदय अन्तराल में सदैव विद्यमान रहती है, जब कलात्मक सृजन में उद्भूत हो जाती है तो रस की स्थिति अवतरित होती है।

भरतमुनि ने अपने नाट्य शास्त्र में प्रत्येक रस का सम्बन्ध एक विशेष रंग से स्थापित किया है। यह रंग रसों के प्रतीक रूप में प्रतिष्ठि है–

रस	**रंग**	**रस**	**रंग**
श्रृंगार	हल्का हरा	वीर	रक्त
हास्य	श्वेत	भयानक	काला
करुण	कपोत (ग्रे)	वीभत्स	नीला
रौद्र	गौर(लाल)	विस्मय	पीला

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

श्रृंगार रस– इसका स्थायी भाव रति एवं रंग हल्का हरा माना गया है। इसे रस राज की संज्ञा दी गयी है। यह संयोग और वियोग दोनों को प्रतिपादित करता है। रति भाव की प्रधानता के कारण लालित्यपूर्ण मुद्राएँ एंव लावण्य इसका प्रमुख अंग है। चित्रों में हरे, लाल एवं पीले रंगों का प्रयोग प्रमुखता से करके इस रस को अधिक तीव्रता से प्रदर्शित किया जाता है।[7]
हास्य रस– हास्य रस एक सुखद अनुभूति का परिचायक रस है। इसका स्थायी भाव हास है। हास्य रस के चित्रण में विनोदयुक्त रूप विन्यास, रेखांकन भौड़ा एवं असन्तुलित होता है। सफेद रंग अथवा भद्दे रंगों का प्रयोग उद्दीपक के रूप में उद्रेक संचालित करता है।[8]
करुण रस– इस रस का स्थायी भाव शोक है। करुण रस के चित्रण में आकृतियों में स्थिरता, मुखमुद्रा पर शान्तिभाव, दयाभाव, याचना के भावों को प्रदर्शित किया जाना चाहिये। सफेद रंग अथवा ग्रे रंग का प्रयोग इसके लिये उपयुक्त बताया गया है। भूरा, काला एवं गहरा नीला रंग भी इस रस को उद्वेलित करता है।[9]
वीर रस– इस रस का स्थायी भाव शोक है। चित्रण में कठोर, सशक्त गतिमय रूप एवं रेखाओं के साथ गहरे रंगो के साथ रक्त वर्ण की अधिकता इसे अधिक तीव्र बनाती है जिनमें हरा, नीला, नारंगी, लाल आदि प्रमुख है।
रौद्र रस–इसका स्थायी भाव क्रोध है तथा इसे भी रक्त वर्ण द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। चित्रण में रेखाएँ सशक्त व गहरे रंग जिनमें बैंगनी, लाल, भूरा, काला रंग प्रमुख है।
भयानक रस– इस रस का स्थायी भाव भय है। इस रस के चित्रण में विकृति एवं क्रोधयुक्त आकृतियाँ, रेखाएँ, कठोर असन्तुलित व उलझन व्यक्त करती है। चित्रण में अधिकांश गहरे एवं काले रंगों का प्रयोग प्रमुख माना जाता है।
वीभत्स रस– इस रस का स्थायी भाव जुगुप्सा है। इस रस को प्रकट करने हेतू कलाकार असुन्दर, अप्रिय रूपों का निरूपण करता है तथा इस रस को प्रस्तुत करने के लिये गहरा नीला रंग प्रयुक्त माना गया है तथा भूरे एवं काले रंगों का प्रयोग भी किया जाता है।
अद्‌भुत रस– आकृति के रूप विन्यास में विस्मय भाव को अद्‌भुत रस की अवस्था कहा जाता है। इसका स्थायी भाव विस्मय व इसे पीले रंग से प्रदर्शित किया जाता है।
इन आठ रसों के अतिरिक्त अभिनव गुप्त द्वारा शान्त रस का भी उल्लेख किया गया तथा निर्वेद को इसका स्थायी भाव माना कि जब ऐसी स्थिति आये कि कोई पात्र निर्वेद मुद्रा में जड़ की भाँति स्थिर हो जाये।
भरत मुनि ने इन रसों का परिचय अपने ग्रन्थ में प्रस्तुत करके सभी कलाओं के लिये उपयोगी बताया।
जहाँ कला है, वहाँ भावों की अभिव्यक्ति है, जहाँ भाव है, वहाँ रसों का होना स्वाभाविक है और चित्रकला में रसों की निष्पत्ति के लिये चित्रकला के प्रमुख तत्वों में समाहित रंगों का महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि रंगों का चित्रकृति की स्वाभाविक प्रवृत्तियों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। रंग भावो ंको उभार कर चित्र में इस स्थिति को जन्म देते हैं।

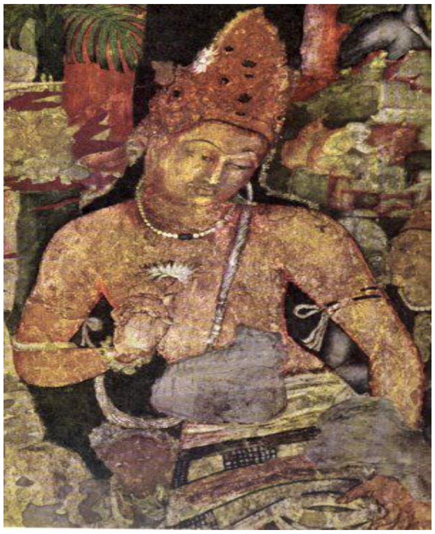

अवलोकितेश्वरा ,अजन्ता

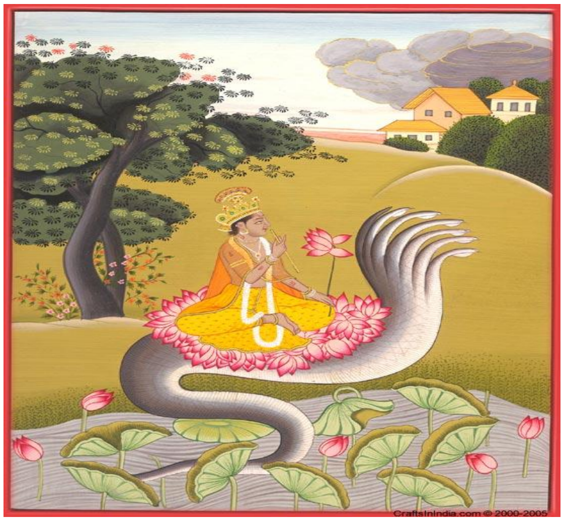

कालिया दमन, लघु चित्रण

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भारतीय चित्रकला के परिदृश्य में रंगों की भाषा प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक निनरन्तर रचनात्मक कौशल के साथ प्रस्तुत होती रही है। अजन्ता की महान कलाकृतियाँ नियमबद्ध रंग संयोजन की सृजनात्मकता को प्रस्तुत करती है जिनमें प्रत्येक भाव निहित है। लघु चित्रण परम्परा में रंगों का प्रतीक रूप में रचनात्मक प्रयोग सम्पर्ण विश्व को आज भी अपने आकर्षण में बाँधे है। वह रंगों की सुकोमल भाषा व सप्तरंग संसार ही है जिसने पहाड़ी कला में भावों की अनगिनत श्रृंखलाओं को प्रस्तुत किया। मुगल कला का सूफीयानापन व उसका राजसी वैभव भी आकर्षक एवं कलात्मक रंग संयोजनों की रचनात्मक क्षमता का परिचायक है। भारतीय चित्रकला की यह प्राचीन धरोहर अपने इन्हीं विशिष्ट गुणों से भावों की अतिरंजना को प्रस्तुत करती हैं। परिवर्तित गतिशील कला के अन्तर्गत कलाकारों ने अपने मन के भावों की अभिव्यक्ति के लिए मनः कुल रंगों का प्रयोग किया और अपनी आकृतियों को रसीााावपूरित किया। आधुनिक कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों में रंगों के कलात्मक प्रयोग में नवीन आयाम स्थापित किये। यामिनी राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अमृता शेरगिल, गगेन्द्रनाथ ठाकुर इन सभी कलाकारों की कृतियों में रंगों के आलोक की अद्भुत शक्ति एवं निर्भीकता के दर्शन होते है। यामिनी राय ने सीमित रंगों के प्रयोग से अपने चित्रों में वात्सल्य, सौन्दर्य एव ं शान्त रसों की अद्भुत अभिव्यंजना प्रस्तुत की है। इसी प्रकार अमृता शेलगिल के लाल, नारंगी एवं कत्थई रंगां की रचनात्मक आभा प्रेम श्रृंगार एवं वियोग के स्वपनिल प्रभाव को प्रस्तुत करते है। प्रभाववाद एवं घनवाद के आगमन के साथ रंगों के स्वाभाविक एवं निर्मल सौन्दर्य को अधिक प्रयुक्त किया गया। हेब्बार, चावड़ा, बेन्द्रे, गोपाल घोष, डी. जे. जोशी, एस. बी. पाल्सीकर यह वह सभी कलाकार है जिन्होंने अपने चित्रों में रंगों को नयी भाषा एवं पहचान दी। मानव जीवन के विविध भावों को रंगों के आकर्षक प्रयोग से उभारा। एम. एफ. हुसैन, तैयब मेहता, रजा, लक्ष्मण पै, पारितोष सेन, रामकुमार भारतीय कला नक्षत्र के यह सभी सितारे रंगों के सिद्धहस्त प्रयोग के प्रमाणिक उदाहरण है।

भाव व रस चित्रकला में सदैव सम्बन्धित रहे हैं। अतः उनका महत्व प्राचीन काल से आज तक विद्यमान है। रंगों व रसों की उपस्थिति एक कलाकृति को सप्राण बना देती है। रेगों कसे कलाकृति में आकर्षक स्वरूप व ऊर्जा परिलक्षित होती है, जो चित्र में संवेगात्मक भावों को उद्वेलित करती है।

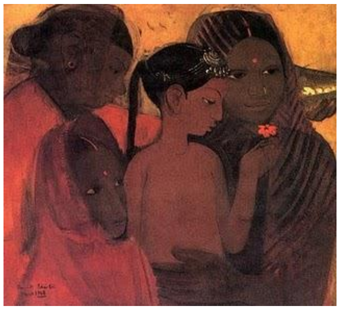

पुष्प विक्रेता, बेन्द्रे आदीवासी युवतियॉ ,अमृता शेरगिल

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाचस्पति गैरोला, भारतीय चित्रकला, पेज–54
2. समरागंणसूत्रधार ।। अध्याय 55 श्लोक–4
3. वासुदेव केतकर गोदावरी, भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र
4. राजेन्द्र, वाजपेयी, सौन्दर्य, तृतीय संस्करण, पृ.सं.–52
5. वासुदेव केतकर गोदावरी, भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र
6. चित्रसूत्रम्
7. चित्रसूत्रम् 3. 38. 15
8. वासुदेव केतकर गोदावरी, भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र